ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 154-156

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

सहकारिता एवं स्वयं सहायता समूह में महिलाएं

ममता

पी.एचडी स्कॉलर– छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर (उ0प्र0) भारत

Received-31.01.2023, Revised-05.02.2023, Accepted-10.02.2023 E-mail: yadavmamta0905@gmail.com

सारांशः ***सहकारिता भारतीय संस्कृति का प्राण रही है। इसका एक लंबा इतिहास रहा है। कोई भी व्यक्ति समाज में रहकर एक दूसरे के सहयोग के बिना अकेले अपना काम नहीं चला सकता। यदि मानव समाज सहकारिता को न अपनाता तो शायद आज मानव इतनी प्रगति न कर पाता। मानव जाति का मूल मंत्र ही सहकारिता है। समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की कार्य शक्ति अलग–अलग होती है। मनुष्य अपनी साधारण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी एक दूसरे पर अधिक निर्भर है, कि यदि एक दिन के लिए भी उसे दूसरों को सहयोग न मिले तो शायद वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति संतुष्टजनक ढंग से नहीं कर सकता है।***

कुंजीभूत शब्द– इन्टरनेट, साइबर अपराध, नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी ।

देश की आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है। इसके लिए ग्रामीण महिलाओं हेतु आजीविका के बेहतर अवसर सृजित करने के लिए क्षमता निर्माण और कौशल विकास महत्वपूर्ण होगा। दीनदयाल अत्यंत योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन का लक्ष्य 2023–24 तक 09 से 10 करोड़ ग्रामीण गरीब परिवारों तक पहुंच बनाना है। सामुदायिक संस्थानों को बढ़ावा देना और उनका क्षमता निर्माण दीनदयाल अंत्योदय योजना के मुख्य घटकों में से एक है। मिशन का उद्देश्य प्रत्येक गरीब परिवार से एक महिला सदस्य को स्वयं सहायता समूह में शामिल करना है। इन समूहों को ग्राम स्तर पर ग्राम संगठनों में संगठित किया जाना है। मिशन में अब तक 8.17 करोड़ महिलाओं को 75 लाख स्वयं सहायता समूह में शामिल किया गया है। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी किसी मुहिम को कितना सफल बना सकती है इसके लिए उदाहरणों की कमी नहीं है "जल जीवन मिशन "इसका जीता जागता उदाहरण है। वास्तव में स्वयं सहायता समूह की स्थापना अनौपचारिक रूप से 1980 के दशक के दौरान ही शुरू हो चुकी थी। हालांकि वास्तविक पहचान 1992 में स्वयं सहायता समूह आंदोलन को दी गई थी।

स्वयं सहायता समूह आपस में अपनापन रखने वाले एक जैसे सूक्षम उद्यमियों का ऐसा समूह है। जो अपनी आय से सुविधाजनक तरीके से बचत करके और उसको समूह के संबंधित फंड में शामिल करने एवं उसे समूह के सदस्यों को उनकी उत्पादक और उपभोग जरूरतों के लिए समूह द्वारा तय ब्याज अवधि और शर्तों पर दिए जाने के लिए आपस में सहमत होते हैं। यह लोगों का ऐसा अनौपचारिक समूह है जो अपनी सामान्य समस्याओं के समाधान के लिए एक साथ आते हैं। स्वयं सहायता समूह एक समान सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले 10 से 20 या उससे अधिक छोटे उद्यमियों का पंजीकृत अथवा अपंजीकृत समूह होता है। सरकार ने हाल में ग्रामीण महिलाओं की बेहतरी के लिए कई योजनाओं की शुरुआत की है। जैसे कि उज्जवला योजना अंत्योदय योजना ,बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ,राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन और कुछ अन्य योजनाएं। इन योजनाओं से साफ है कि ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण केंद्र सरकार की प्राथमिकता सूची में काफी महत्वपूर्ण है। ताकि भारत के सपने को पूरा किया जा सके।

परिवारों की आजीविका को अप्रत्यक्ष रूप से मजबूत करने के लिए स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से ग्रामीण स्वास्थ्य एवं पोषण, विशेषकर मातृ–बाल स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। जिनमें गर्भवती महिलाओं, बच्चों, किशोरियों को मिलने वाली सेवाओं की जानकारी, उनकी सेवाओं का लाभ उठाने के लिए संस्थागत प्रसव की तैयारी, टीकाकरण, मातृ बाल पोषण, को बढ़ावा, परिवार नियोजन, स्वच्छता एवं जागरूकता निर्माण आदि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। समूह की बहुत बड़ी भूमिका व्यवहार परिवर्तन करना भी है

स्वयं सहायता समूह एवं महिलाएं– आज विश्व में महिलाओं के पक्ष में समुचित विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जा रहा है। अब महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के साथ कदम मिलाकर समाज में अपने अस्तित्व का आभास दिलाने का सफल प्रयास कर रही हैं। स्वयं सहायता समूह में महिलाओं को शामिल किया जाता है। इसमें सभी सदस्यों द्वारा मासिक आधार पर एक बराबर राशि तय की जाती है। जिसे पदाधिकारियों के पास जमा को अपने रजिस्टर में दर्ज करते हैं। उसके बाद उस बचत को नजदीकी बैंक में जमा करते हैं। जहां उन्होंने समूह के रूप में खाता खोल रखा है। वर्तमान समय में ग्रामीण महिलाएं भी आर्थिक क्षेत्र में मुख्य भूमिका निभा रही हैं महिलाएं गांव में ही रहकर विभिन्न प्रकार के उद्योगों का संचालन कर रही हैं। स्वयं के उद्योगों के विकास के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं का सहारा ले रही हैं। स्वयं सहायता समूह का गठन महिलाओं की आर्थिक सशक्तता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

स्वयं सहायता समूह में सहकारिता ,महिलाएं एवं चुनौतियां– भारतीय महिलाओं को जन्म आधारित अयोग्यता से मुक्त कर स्वतंत्रता एवं समानता का वातावरण उपलब्ध कराने की प्रक्रिया एक अत्यंत जटिल प्रश्न है। महिला शिक्षा की कमी आर्थिक विकास में बड़ी बाधा है। शिक्षा महिलाओं को रोजगार के अवसर देकर गरीबी से बाहर निकलने का रास्ता प्रदान करती है। महिला शिक्षा, से व्यक्ति और देश दोनों लाभान्वित होते हैं। महिला शिक्षा समाज में धन के वितरण की समानता को भी बढ़ाती है। यदि महिलाएं शिक्षित होगी तो स्वयं सहायता समूहों में वह सहकारिता की भावना से जागरूक होकर अपने कार्यों को आसान तरीके से संपर्क कर सकती हैं। पितृसत्तात्मक प्रकृति, पारंपरिक रूढ़िवादी सोच,कम उम्र में विवाह बाल, श्रम और संरचनात्मक एवं संस्थागत कारण के कारण देश के अधिकांश महिलाएं शिक्षा के अधिकार से वंचित रह जाती हैं। शिक्षा महिलाओं को विशेषज्ञ कौशल प्रदान कर उन्हें बेहतर नौकरी के लिए योग्य बनाती है। रूढ़िवादी एवं पुरातन समाज इस विचारध ाारा का घोर विरोधी है। जबकि महिलाओं में क्रमानुसार सुधार लाने की प्रतिबद्धता लगन एवं अनुशासन की भावना से काम करने से लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

भारतीय ग्रामीण समाज में स्त्रियों के निम्न स्थितियों का पोषण होता है स्त्रियों की आर्थिक परतंत्रता अत्यंत लंबे समय से चली आ रही है जिस को पोषित करने में ग्रामीण परंपरा एवं पितृसत्तात्मक प्रणाली की मुख्य भूमिका पाई जाती है। स्वयं सहायता समूह में महिलाएं सशक्त होती नजर आ रही है। पहले महिलाएं समूह में केवल बचत की भावना से जुड़ती हुई देखी जाती थी। लेकिन अब महिलाएं समूह की बैठकों में बचत के अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं की समस्याओं और विकास के संबंध में भी चर्चा करती हुई दिखाई दे रही है। आज हमारा देश दुनिया भर में महिलाओं द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह के क्षेत्र में सर्वोपरि स्थान रखता है। किंतु यह चिंतनीय विषय है कि हमारे देश की सामाजिक सांस्कृतिक प्रशासनिक राजनीतिक एवं एवं आर्थिक परिस्थितियां महिला समूहों की गतिशीलता एवं व्यावहारिकता के सामने अनेक समस्याएं खड़ी करती नजर आती रही हैं।

स्वयं सहायता समूह प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहकारिता की भावना से प्रेरित होकर एकजुट होकर कार्य का संचालन करते हैं। स्वयं सहायता समूह में कार्य करने के कारण महिलाओं के आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, स्वाभिमान एवं आत्म गौरव में भी वृद्धि होती है। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से ही महिलाएं सशक्त होती हैं। उनमें सफलता व सुयोग्यता आत्मनिर्भरता जैसे विचारों का जन्म होता है। सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के लगभग सभी समाजों में स्त्री–पुरुष भेदभाव को कम करने में महिला सशक्तिकरण की मुख्य भूमिका देखी जा सकती है और यह सभी सहकारिता एवं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से संभव होता नजर आ रहा है।

स्वयं सहायता समूह को बढ़ावा देने के लिए सहकारी समितियां– सहकारी समिति द्वारा प्रदान किए जाने वाले ऋण से महिलाओं को आर्थिक रुप से स्वतंत्र बनाने में सफलता हासिल की जा सकती है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सहकारिता आंदोलन लक्ष्यहीन स्वयं सहायता समूहों की तुलना में बेहतर है और उन्हें एक नई दिशा प्रदान करने का काम करता रहा है। मूलभूत तथ्य यह है कि सहकारिता अनिवार्य रूप से संगठित स्वयं सहायता समूह, निजी एवं स्वतंत्र और स्वायत्त संगठनों का एक रूप है। सहकारिता वास्तव में कई रूप ले सकती है। यह सिर्फ किसी संगठन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मानव को हमेशा से ही प्रभावित करती रही है। सरकारी मॉडल लोगों को गरीबी से बाहर निकालने का एक सबसे सफल मॉडल के रूप में उभरा है। हालांकि सभी सहायता स्वयं सहायता समूह पूरी तरह से सहकारिता नहीं है, लेकिन यह भी सत्य है कि बिना सहयोग व सहकारिता की भावना से प्रेरित होकर काम किए बगैर किसी भी कार्य को अंतिम रूप देना संभव नहीं है।

सहकारिता एवं स्वयं सहायता समूहों के उद्देश्य– स्वयं सहायता समूह का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को ऋण उपलब्ध कराना है तथा महिलाओं को आपस में जोड़कर सहयोग को बढ़ावा देना है। स्वयं सहायता समूह में कार्य करने के कारण महिलाओं में स्वर निर्णय की शक्ति का विकास होता है। घर की चहारदीवारी से बाहर निकलकर स्वनिर्णय, समूह की गतिविधियों के संचालन में भागीदारी, बैठकों में भाग लेती नजर आ रही हैं। अतः यह सब महिलाएं अकेले नहीं बल्कि सहकारिता की भावना से प्रेरित होकर एवं एकजुट होकर यह सब करने में संभव हो पा रही है। महिलाओं के लिए नए उद्योगों की स्थापना, रोजगार में वृद्धि, निर्धन महिलाओं को बैंकों से अथवा स्वयं के कोष से आर्थिक सहायता प्रदान करना, स्वावलंबन का विकास, महिलाओं में प्रतिनिधित्व का विकास, निर्णय लेने की क्षमता का विकास, आदि पहलुओं पर भी ध्यान देने की जरूरत है। महिलाओं के वित्तीय समावेशन का सबसे प्रभावशाली मार्ग ग्रामीण भारत में सहकारी स्वयं सहायता आंदोलन रहा है। सहकारी मूल्यों और सिद्धांतों का पालन करते हुए महिलाओं के स्वयं सहायता समूह की स्थापना का उद्देश्य ग्रामीण परिवारों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार करना, गरीबी को कम करना एवं महिलाओं को सशक्त बनाना है। ग्रामीण महिलाओं के लिए उद्यमिता की राह आसान नहीं है। इसके बावजूद पिछले 06–07 सालों में इस दिशा में काफी कम हुआ है और इस क्षेत्र में अब दर्जनों ऐसी महिलाएं सितारों की तरह चमक रही है। जिन्होंने अपने बलबूते सफल उद्योगों की शुरुआत की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

है। ग्रामीण महिलाओं को सफल उद्यमी में बदलना एक सामाजिक आवश्यकता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि–"एक पुरुष को शिक्षित कर केवल एक व्यक्ति को शिक्षित किया जा सकता है, लेकिन एक महिला को शिक्षित कर एक राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।" इस सोच के साथ देश में स्वयं सहायता समूह की शुरुआत की गई, तॉकि महिलाओं की सामूहिक शक्ति में उनके परिवार और उनके समुदायों और पूरे देश के सामाजिक–आर्थिक तस्वीर बदली जा सके।

निष्कर्ष– स्वयं सहायता समूह निर्धनता उन्मूलन की एक महत्वपूर्ण परिकल्पना है। समूह के माध्यम से रोजगार के साधनों अर्थोपार्जन के लिए महत्वपूर्ण विकल्पों का निर्माण किया जाता है। स्वयं सहायता समूह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति सहकारिता की भावना से प्रेरित होकर करता है। समूह का आकार सीमित होने के कारण उद्देश्य को प्राप्त करना आसान हो जाता है। आज प्रत्येक धर्म के लोगों में महिलाओं के प्रति उदारता आई है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं संगठित होकर एवं सहकारिता की भावना से प्रेरित होकर छोटे–छोटे कार्यों का संपादन कर रही हैं। इसके प्रति हमारी सरकार भी पूरी तरह से प्रयत्नशील है एवं अनेकों योजनाएं संचालित करके ग्रामीण क्षेत्र तक महिलाओं को लाभ पहुंचाने में सफल सिद्ध हो रही है। देखा जाए, तो आज पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की पूर्ण या आंशिक सहभागिता पाई जाती है।

यह कहा जा सकता है कि आज हमें बेहतर स्थिति में है क्योंकि महिलाओं की भागीदारी स्वयं सहायता समूह में तेजी से बढ़ रही है। 'दीनदयाल अंत्योदय योजना– राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' देश की ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए समर्पित है। मिशन के तहत गठित स्वयं सहायता समूह सक्षम एवं आत्मनिर्भर ग्रामीण नारी का चेहरा भी है। यह समूह व्यवस्थित तरीकें से महिलाओं के आर्थिक सामाजिक बदलाव के लिए प्रयासरत है। आजीविका मिशन का सहयोग विभिन्न क्षेत्रीय कलाओं के लिए वरदान साबित हो रहा है सरकार की नई योजना 'वन डिस्टिक –वन प्रोडक्ट' से भी इन हस्तशिल्प शकारों को मदद मिल रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, आलोक.(2021) सहकारिता से समृद्धिः बुक्स क्लीनिक पब्लिकेशन।
2. सिंह कटार, सिसोदिया अनिल,(2018) ग्रामीण विकासः सिद्धांत, नीतियां एवं प्रबंधनः सेज पब्लिकेशन।
3. खुराना ललिता, सशक्त होती ग्रामीण महिलाएं, अप्रैल 2022, कुरुक्षेत्र।
4. भार्गव, पंडित शंकर प्रसाद, (1935). भारतीय सहकारिता आंदोलनः दारागंज (इलाहाबाद) पब्लिकेशन।
5. नेहरू, जवाहरलाल (1964), ग्राम समाज का नया रूपः सहकारिता, नवीन प्रेस दिल्ली।
6. कोरेथ जार्ज, बड़ेहरा किरण. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, सेज पब्लिकेशन।
7. www.pib.ac.in.
8. शर्मा, विद्यासागर, (1960) आधुनिक सहकारिता, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन नई दिल्ली।
9. खुराना ललिता, कृषि उद्यमिता, अक्टूबर 2022, कुरुक्षेत्र।

*****